IJAER/May-June- 2024/Volume-13/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Researc
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

आधुनिक चित्रकला में प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल की भूमिका

रीना सिंह
शोधार्थिनी
मोनाड विश्वविद्यालय,
हापुड (उ0प्र0)

डॉ0 आशीष गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
मोनाड विश्वविद्यालय,हापुड

मानव के हृदय में जो सरल एवं सहज भाव जागृत हो, उसका माध्यम कला है। वस्तुतः कला का तात्पर्य सृजन से है अर्थात् नवजीवन को निर्माण से चित्रकला का उदभव व विकास मानव सभ्यता के साथ हुआ मानव के साथ ही चित्रकला का विकास माना जाता है। वर्तमान समय में चित्रकला अपनी उच्च स्तर पर है। तथा आज के समय चित्रकला ने नवीन प्रयोग करके अपनी एक अलग पहचान बनाई है। जिससे समाज को प्रेरणा प्रदान होती है और कला व संस्कृति की जानने का अवसर प्राप्त होता है।

कला में आधुनिक शब्द समसमायिक कला तथा कलाकार की नवीन जाग्रति का प्रतीक है। भारतीय चित्रकला का इतिहास 1880 ई0 में राजा रवि वर्मा की कला से प्रारम्भ हुआ। इसके प्रारम्भकर्ता में अवनीन्द्रनाथ टैगोर थे। अगर हम बंगाल शैली का अवलोकन करें तों हम यह निष्कर्ष पायेगें कि कला में तीव्रगति से परिवर्तन हुआ है और यह परिवर्तन अकस्मात नहीं हुआ है। समयानुसार बदलते प्रभावों परिस्थितियों एवं प्रेरणाओं के आधार पर समकालीन कला का स्वरूप प्राप्त कर सकी है। इसके अन्तर्गत चित्रकारों ने नए–नए प्रयोग करके चित्रकला को एक नया आयाम प्रस्तुत किया। इसके अन्तर्गत आधुनिक चित्रकारों जैसे राजा रवि वर्मा, अवनीन्द्रनाथ, नंदलाल बोस, रामगोपाल विजयवर्गीय ने नए–नए प्रयोग करके चित्रकला का एक नया आयाम प्रस्तुत किया जिसमें प्रो0 रामचन्द्रशुक्ल ने अपने चित्रों के माध्यम से कला के क्षेत्र में अलग ही पहचान बनायी। इनकी कला में रेखाचित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल का मानना है **''भावों के साथ प्रवाहित होकर तत्परता से अभिव्यक्त करने में रेखाओं के द्वारा जो सुगमता और कुशलता प्राप्त होती है वह रंगों के प्रवाह द्वारा नहीं हो पाती।''**

उत्तर प्रदेश में जन्में आधुनिक चित्रकार प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल का जन्म् 1923 ई0 जिला बस्ती के हरैया तहसील में एक छोटे से गांव शुक्लपुरा में हुआ। इनकी कला शिक्षा क्षितीन्द्रनाथ के निर्देशन में

इलाहाबाद में हुई। यह एक समाक्षावादी चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध रहे। भारतीय कला में समीक्षावादी चित्रों का आरम्भ इन्होंने ही किया। यह इकलौते ऐसे चित्रकार हैं, जिन्हे फ्रांस में भारतीय चित्रकला के लिए ''फ्रोगोनार्ड'' पुरूस्कार प्राप्त हुआ। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कला संकाय में लम्बे समय तक शिक्षक तथा विभागाध्यक्ष पद पर रहे तथा अपने समीक्षावादी चित्रों को 'छाव' की प्रमुखता दी।

प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी कला की प्रारिम्भक प्रेरणा के विषय में लिखा है कि **''जब मैं बहुत छोटा था, मेरी माता जी बाजार से छपे–छपाये देवी–देवता के चित्र खरीद कर लाया करती थी और दीवार पर टँगा देती थी। वे मुझे आकर्षित करते थे और अक्सर उन्हीं को देखकर मैं पेसिल और पेस्टल रंग से कागज पर उतारने का प्रयास किया करता था। जब चित्रों को दूसरों को दिखता था और वे लोग तारीफ करते थे जिससे मुझे प्रेरणा मिलती थी।''**

शुक्लजी के कला गुरू क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार द्वारा अपनाए गए विचारों द्वारा अपने चित्रों को सत्यत्त तथा मौलिक रूप प्रदान किया। प्रारम्भ में इन्होंने टैगोर शैली अपनायी किन्तु बाद में अपनी निजी शैली में कार्य किया। जिसमें नये प्रयोगवादी रूप में चित्रण तथा विभिन्न रूप के तत्व विद्यमान थे। इन्होंने अपने चित्रों में कम से कम रेखाओं का प्रयोग किया है।

गणेश –

इनके द्वारा निर्मित 'गणेश' चित्र एक ऐसा चित्र है जो हिन्दू धर्म में सबसे प्रमुख स्थान दिया गया है और कोई भी शुभ कार्य करने से पूर्व गणेश जी की पूजा की जाती हे। प्राचीन काल से ही लोककला में विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से गणेश जी को चित्रित किया गया है तथा शुक्ल जी ने टेम्परा माध्यम में गणेश चित्र को गहरे तथा चटक रंगों में चित्राकन किया है। गणेश जी के शरीर को गहरे लाल रंग से चित्रित किया गया है तथा दाहिने हाथ में एक लड्डू और बायां हाथ को घुटने पर रखे दर्शाया गया है। इनका आसन तथा आभामण्डल सफेद उज्जवल रंग से प्रकाशवान हो रहा है तथा इन्होंने गणेश जी को पीले रंग की धोती एवं मुकुट आभूषणों से सुसज्जित किया है। तथा इनके समीप एक मूषक का अंकन हैं पृष्ठभूमि में गहरा पीला रंग का प्रयोग करके उसके ऊपर नील व सफेद रंग मिलाकर बेल–बूटेंदार

जालियाँ बनायी गयी हैं। मानों यह ऐसा लगता है चित्र प्राचीन कला सांस्कृति लोककला से प्रेरित होकर बनाया गया हो।

शुक्लअभिसारिका

यह चित्र वॉश पद्धति में चित्रित किया गया है तथा चित्र के मध्य में गौर वर्णीय नायिका का अंकन किया गया है। जो **''शुक्ल अभिसारिका नायिका''** है। जिसका वर्णन कवि बिहारी द्वारा रचित एक दोहे में उल्लेखित है।

जुवति जोन्ह में मिलि गई नैंक न होति लखाइ।

सौधे के डोरै लगी अली चली सँग जाई।।

अर्थात् जब कोई नायिका शुक्ल पक्ष की रात्रि में चाँदनी में अपने प्रिय से मिलने जाती है। तब वह शुक्लाभिसारिका कहलाती है। कवि बिहारी द्वारा नायिका के बारे में बताया गया है कि वह गौर वर्ण की युवती चाँदनी में ऐसे मिल गयी है कि अभिसार की ओर जाती हुई वह किसी को दिखाई नहीं दे रही। शुक्लाभिसारिका नायिका के साथ उसकी सखी केवल उसके शरीर सुगंध के सहारे चल रही है।

कवि बिहारी द्वारा लिखित शुक्लभिसारिका नायिका में निहित भावना को रेखा व रंग द्वारा साकार रूप में चित्रित किया है। इस चित्र को चाँदनी रात में गौर वर्णीय नायिका को दर्शाया गया है। जो अपने प्रियतम से अभिसार हेतु त्वरित गति में जा रही है गतिमान होने के कारण ओढ़नी तीव्र वेग में उड़ती हुई दिखाई दे रही है। यद्यपि लावण्मयी नायिका का अनुपम सौन्दर्य नायिका की वेग पूर्ण ओढ़नी से दीप्तिमान हो रहा है। चित्रकार ने इस चित्र का यर्थाथपूर्ण तथा सौन्दर्य चित्रण करके इस चित्र को अधिक भावना से ओत प्रोत कर दिया है। जो जीवान्त सा प्रतीत हो रहा है।

रेंखाकन के माध्यम से चित्रण –

चित्रकार ने इस चित्र में स्याही के माध्यम से त्वरित रेंखाकन किया है। इन्होंने स्याही की विभिन्न तानों का प्रयोग किया है। सम्पूर्ण रेखांकन लय युक्त अलंकरण के रूप में चित्रित है तथा घुमावदार

रेखाओं का प्रयोग किया है। चित्रकार ने रेखांकन के छाया–प्रकाश का बड़ा ही सौन्दर्यपूर्ण सृजन किया है।

प्रो0 रामचन्द्रशुक्ल जी की चित्रकला का अध्ययन करने के पश्चात् हमें यह ज्ञात होता है कि वह सिद्धहस्त समीक्षावादी चित्रकार के साथ, कला साहित्य लेखक भी थे। उनकी कलाकृतियाँ भावपूर्ण तथा तीव्र रेखांकन द्वारा हृदय को शान्ति प्रदान करने वाली है उनके चित्रों में भाव तथा कला के सभी रसों की अनुभूति होती है जो चित्र को आनंद प्रदान करते है और समाज को नयी प्रेरणा देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, कला और कलम।
2. डॉ0 जगदीश चन्द्रिकेश, अपने समय की मांग की पूर्ति पटना कलम् समकालीन कला।
3. डॉ0 अमृतलाल, ''समीक्षावादी चित्रों की पहचान एवं विशेषताएँ (2022 Artistic Narration & Vol-XIII, No-1)
4. गोस्वामी डॉ0 प्रेमचन्द्र, आधुनिक भारतीय चित्रकला के स्तम्भ
5. डॉ0 हदृय गुप्ता, ''दृश्यकला के मूलभूत सिद्धान्त, तकनीक एवं परम्परा''
6. डॉ0 ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला
7. के.एस. कुलकर्णी, कला त्रैमासिक, लखनऊ, अप्रैल 1977
8. डॉ0 ऋतु जौहरी, भारती कला समीक्षा (विचार व रूप) प्रथम संस्करण, 2013, राजस्थान हिंदी गृंथ अकादमी।

चित्र फलक

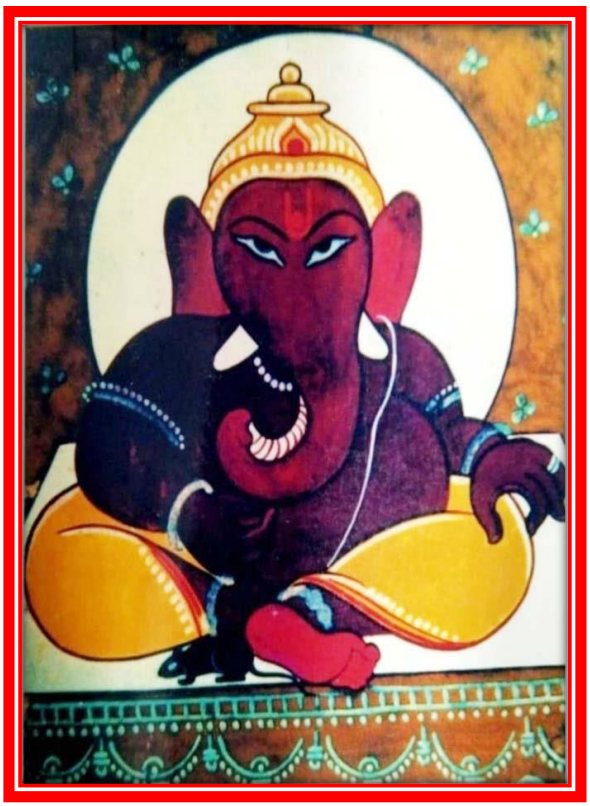

चित्र सं0–01 : गणेश जी

चित्र सं0–02 : शुक्लभिसारे नायिका

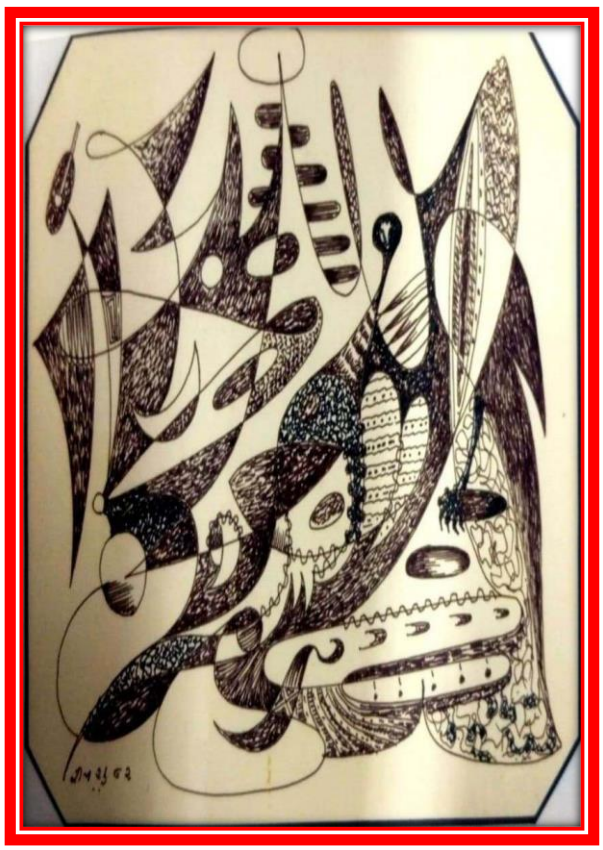

चित्र सं0–03 : रेखांकन

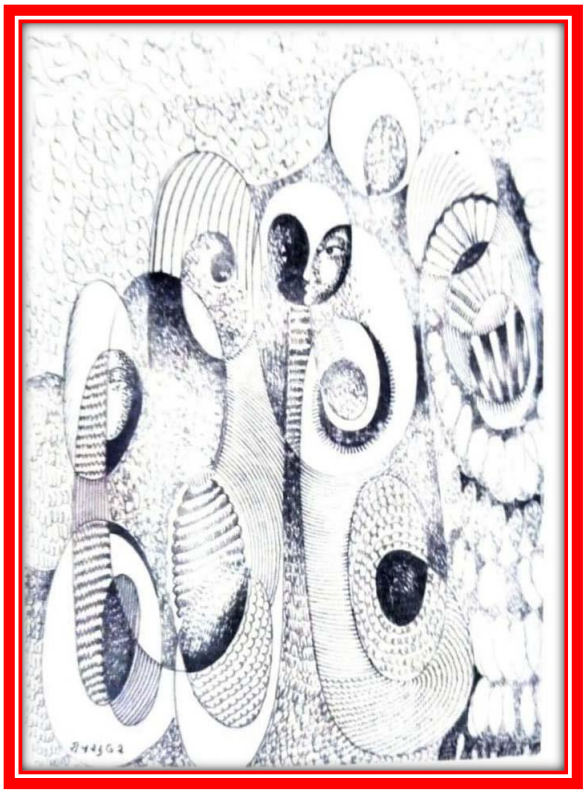

चित्र सं0–04 : रेखांकन